ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-7* August- 2020
Innovation The Research Concept

समाजिक आर्थिक विकास में डूंगरपुर जिले का बढता हुआ लिगांनुपात

Dungarpur District's Increasing Sex Ratio In Socio-Economic Development

Paper Submission: 16/08/2020, Date of Acceptance: 25/08/2020, Date of Publication: 26/08/2020

पी..एल. कटारा
सह प्राध्यापक,
भूगोल विभाग,
वीर बाला कालीबाई राजकीय कन्या महाविद्यालय
डूंगरपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

राजस्थान के दक्षिण में स्थित जनजातिय बाहुल जिले में बढता हुआ लिंगानुपात के लिये यहां की जलवायु, धरातलीय दशाएं, सामाजिक आर्थिक कारक, वैवाहिक संरचना, व्यावसायिक संरचना, रूढिवादिता, बालविवाह एवं चिकित्सक परामर्श आदि कारणो से जिले में लींगानुपात बढ रहा है। साथ ही आर्थिक विकास में सकारात्मक प्रभाव दिखाई दे रहा है।

In the Janajatiya Bahul district, located in the south of Rajasthan, for the increasing sex ratio, the sex ratio in the district is increasing due to its climate, surface conditions, socioeconomic factors, marital structure, occupational structure, stereotypes, child marriage and doctor counseling etc. At the same time, there is a positive impact in economic development.

मुख्य शब्द : लिगानुपात, वैवाहिक संरचना, घनत्व, धरातलीय विषमताएं, अविवेकपूर्ण मातृत्व, बाल विवाह, विकास योजनाएं।

Signs, Marital Structure, Density, Surface Asymmetries, Indiscriminate Motherhood, Child Marriage, Development Schemes.

प्रस्तावना

डूंगरपुर जिला 23° 20' से 23° 01' उत्तरी अंक्षाश तथा 73° 21' से 73° 23' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। डूंगरपुर जिला अरावली पर्वत माला के दक्षिणाचंल मे स्थित विस्तृत पहाडी भाग में बसा हुआ है। जिसकी सीमाए उत्तर में उदयपुर जिले से व पूर्व में बांसवाडा जिले के साथ तथा दक्षिण में गुजरात राज्य से लगती है। यह जनजाति बाहुल्य जिला है पर्वतिय भाग वनो से आच्छादित है घाटीयों व मैदानी भाग में कृषि कार्य किया जाता है। यहां पर वर्ष भर बहने वाली नदीयां माही, जाखम व सोम है जिससे कृषि कार्य एवं पेय जल की आपूर्ति होती है। यहां पर धरातलिय स्वरूप के आधार पर जनसंख्या बिखरी हुई पायी गई है जिसका मुख्य कार्य कृषि करना है। लिगांनुपात किसी भी राष्ट्र, नगर, ग्रम क्षेत्र, समुदाय, जाति, धर्म के अनुसार परिवर्तन पाया जाता है तथा इनमें काफी विभिन्नता पाई जाती है। जिससे समाजिक व आर्थिक प्रगति में असन्तुलन उत्पन्न हो जाता है। जनाकिंय तथ्य जैसे वैवाहीक संरचना और व्यवसायिक संरचना लिगांनुपात को अत्यधिक प्रभावित करते है।

विधि तंत्र

अध्ययन क्षेत्र में प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकडो का प्रयोग किया गया है। सर्वेक्षण द्वारा, प्रश्नावली, अनुसूचि द्वारा आंकडो को एकत्रिकरण किया गया है साथ ही जिला सांख्यिकीय विभाग एवं आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय द्वारा प्राप्त आंकडो का अध्ययन किया गया है। जनसंख्या घनत्व व लिगांनुपात के आंकडो को ग्राफ व मानचित्र कला द्वारा प्रर्दशित किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. क्षेत्र की जनसंख्या का अध्ययन करना।

2. क्षेत्र की धरातलीय स्थिति का अध्ययन करना।
3. लोगो की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।
4. लोगो को स्वास्थ्य संबंधि जानकारी देना।
5. लोगो को अस्पताल एवं उससे संबंधित सुविधाओं से अवगत करवाना।

जनसंख्या वितरण

जिले का कुल क्षेत्रफल 3770 वर्ग किलोमिटर है जो राज्य के कुल क्षेत्रफल का 1.12 प्रतिषत है। 2001 के अनुसार कुल जनसंख्या 1107643 पुरूष जिसमें से 547791 पुरूष व 559852 महिलाए है। जनगणना 2011 के अनुसार जिले की कुल जनसंख्या 1388552 है जिसमें 696532 पुरूष व 692020 महिलाए है जो निम्नानुसार है।

वर्ष	कुल जनसंख्या	
	राजस्थान	डूंरगपुर
1971	25765810	530258
1981	34261990	642845
1991	44005990	874549
2001	56473122	1107037
2011	68548437	1388552

जिले की जनसंख्या वृद्वि दर

वर्ष	जनसंख्या	वृद्वि दर (प्रतिषत)
1901	100103	–
1911	159192	+ 59.03
1921	189272	+ 18.91
1931	227544	+ 20.22
1941	274282	+ 20.54
1951	308243	– 12.38
1961	406944	+ 32.30
1971	530258	+ 30.30
1981	682845	+ 28.78
1991	874549	+ 28.07
2001	1107037	+ 26.58
2011	1388552	+ 25.36

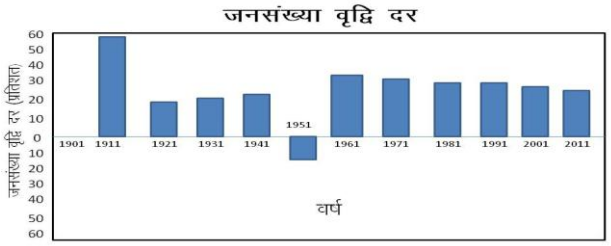

जनसंख्या एवं क्षेत्रफल

शेत्र वर्ष	क्षेत्रफल वर्ग कि.मी	जनसंख्या			जनसंख्या प्रतिषत	घनत्व	लिगांनुपात प्रति 1000 पुरूष
		पुरूष	स्त्री	योग			
ग्रामीण	3749.40	246931	252070	499001	94.11	133	1021
1971	20.60	16185	15072	31217	5.89	1522	93
नगरीय	3770.00	263116	267142	530258	100	141	1015
योग							

ग्रामीण	3752.80	310724	327995	638719	93.54	168	1056
1981	17.20	23227	20899	42126	6.46	2566	900
नगरीय	3770.00	333951	348894	682845	100	181	1045
योग							
ग्रामीण	3742.73	404688	406044	810732	92.70	217	1003
1991	27.27	33636	30181	63817	7.30	2340	897
नगरीय	3770	438324	436225	874549	100	232	995
योग							
ग्रामीण	3747.73	504671	522223	1026894	92.76	220	1035
2001	27.27	41425	38718	80143	7.24	2637	935
नगरीय	3770.00	546096	560541	1107037	100	294	1027
योग							
ग्रामीण	3747.73	651041	648763	1299809	93.61	230	925
2011	27.27	45486	43257	88743	6.39	2260	861
नगरीय	3770.00	696532	692020	1388552	100	368	996
योग							

दशकीय लिंगानुपात

सत्र	नगरीय	ग्रामीण
1901	1023	993
1911	1070	1007
1921	967	990
1931	1023	985
1941	963	970
1951	1001	1003
1961	930	995
1971	931	1021
1981	900	1056
1991	897	1003
2001	935	1035
2011	951	996

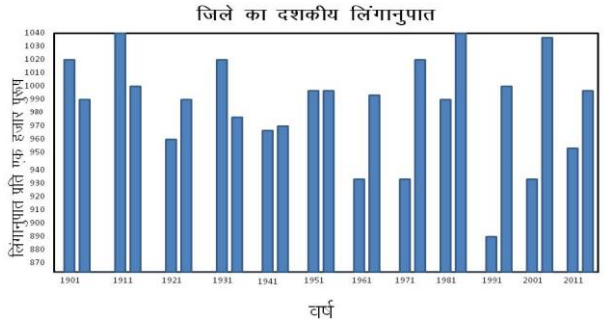

डूंगरपुर जिले के बढते लिगांनुपात के कारण

1. समाजिक व्यवस्था।
2. रूढिवादिता एवं अंधविश्वास।
3. चिकित्सको से परामर्श की उदासीनता।
4. ग्रामीण क्षेत्र का विस्तार।
5. मनोरंजन के साधनो एवं पुत्र प्राप्ति की अभिलाशा।
6. अविवेक पूर्ण मातृत्व।
7. कृषि की प्रधानता।
8. आर्थिक पिछडापन।
9. बाल विवाह एवं अशिक्षा।
10. घरेलु व आर्थिक क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका।
11. केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा महिला विकास में योजनाओं का प्रावधान।
12. वर्तमान में महिलाओं के बढती षिक्षा व प्रभाव क्षेत्र

सामाजिक व्यवस्था

डूंगरपुर जिले मे प्राचीन काल से ही यह देखा गया है कि पुत्रीयो के जन्म को लेकर कोई वैचारिक मद भेद नही होता है तथा पुरूषो के समान ही सम्मान मिलता है। इस जिले में खुले समाज की व्यवस्था है। इसमें महिलाओ को समान महत्व दिया जाता है तथा उनको लक्ष्मी की तरह पूजा जाता है। तथा पुरूष की तरह रहने एवं फलने फूलने की पूर्ण स्वतंत्रता है। जबकि अन्य क्षेत्र मे रहने वाली महिलाओं के लिए इस तरह की सामाजिक व्यवस्थाए नही है। और उनको पुरूष के समान महत्व नही दिया जाता है। पुत्रीयो के जन्म को अशुभ मानते है तथा हिन दुष्टि से देखा जाता है एवं घर से बाहर आने जाने की प्रतिबंधता होती है।

रूढिवादिता एवं अंधविश्वास

क्षेत्र में लिगांनुपात पिछले दशको से बढता आ रहा है। जो इस क्षेत्र में ग्रामीण क्षेत्रीय विस्तार होने से लोग रूढिवादिता पुरानी पम्पराओ पर चलते आ रहे है। अंधविश्वासो के आधार पर लडकीयों को अशुभ नही मानते है। धार्मिक अनुष्ठान वं तान्त्रिक विध्या उनको भ्रमित करती है। यह लोग मानते है की पुत्री होगी तो सांत पीढीयां सूधरेगी ऐसी भावना रहती है।

चिकित्सको से परामर्ष की उदासीनता

डूंगरपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्र में ये लोग स्वास्थ्य विभाग के प्रति उदासीन रहते है। तथा अपने स्वास्थ्य के प्रति गंम्भीर नही रहते है। साथ ही नगरीय क्षेत्र में रहने वाले लोगो की यह सोच रही है कि पुत्र होगो तो वंश चलेगा जबकी ग्रामीण क्षेत्र मे महिलाओं की संख्या बढ रही है। जबकि नगरीय क्षेत्र में घट रही है इसका कारण है कि ग्रमीण क्षेत्र मे लडके लडकीयों का जन्म भगवान की देन मानकर स्वीकार करते है।

मनोरंजन के साधनो का आभाव

यह जिला ग्रमीण क्षेत्र में फैला हुआ है। इसलिये इसमें कई क्षेत्र ऐसे भी है जहां पर अभी तक मनोरजंन के साधन तथा स्वास्थ्य सुरक्षा जैसी मुलभूत सूविधाएं का आभाव पाया जाता है। तथा यह लोग गांव तक ही सीमित रह कर जनसंख्या वृद्वि करते है। जिनमें पुत्री पुत्रीयों के अनुपातिक वृद्वि को ध्यान में न रखकर संतानो को जन्म देते है यहां की जलवायु गरम होने से जब दम्पती मनोरंजन के रूप में स्वयं प्रयास करते रहते है तो उसका इस परिणती का फल संतानोत्पत्ती है साथ लिगांनुपात को बढावा मिलता है।

अविवेक पूर्ण मातृत्व

यह जिला अभी भी पूर्ण रूप से स्वास्थ्य विभाग की जानकारी से अचेत है जो चिकित्सको का परामर्श नही लेते है तथा भ्रमित रहते है। वे उनकी सूझबुझ के आधार पर बीना आधार के संतानो को जन्म देते है। जिस कारण महिलाए अपनी अधिक पुत्रीयों के प्रति किसी भी तरह परेषानी महसुस नही करती है। जो लिगांनुपात को बढाने में महत्पूण भूमिका रखती है।

कृषि की प्रधानता

डूंगरपुर जिले में लोगो का मुख्य व्यवसाय कृषि आधारित है। अधिकांश लोग कृषि कार्य पर लगे हुए है। जिस कारण से यहां पर आसानी से श्रमिक मिल जाते है। तथा परिवार के सभी सदस्य कृषि कार्य पर एवं मजदुरी का कार्य करते है। अधिकतर महिलाए कृषि कार्य को रूचि के साथ करती रहती है जिस कारण से परिवर में वृद्वि होती है।

आर्थिक पिछडापन

डूंगरपुर जिला ग्रामीण क्षेत्र में फैला हुआ है तथा आर्थिक रूप से पिछडा हुआ है जिसमे क्षेत्र में रहने वाले लोग की यह मान्यता रही है की पुत्रीयां होगीं तो मजदुरी करके कमाकर लायेगी। इस भावना के कारण ग्रामीण क्षेत्र में लिगांनुपात लगातार बढ रहा है।

बाल विवाह एवं अशिक्षा

डूंगरपुर जिले में बाल विवाह व अशिक्षा दोनो ही कारण प्राचीन समय से मुख्य रहे है। जो जनसंख्या को बढावा देते है साथ ही महिलाए अपने कार्य को हल्का करने के लिये पुत्रीयों की नासमझ मे जन्म देती है। जो लिगांनुपात को बढाते है।

घरेलु व आर्थिक क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका

सम्पूर्ण रूप से यह जिला कृषि एवं मजदूरी पर निर्भर है इस वजह से ग्रामीण महिलाए कृषि कार्य तथा शहरी महिलाए लघु उद्योग या हस्तशिल्प में हाथ बढाकर अच्छा रोजगार उत्पन्न करती है। प्राचीनकाल से ही यह मान्यता रही की डूंगरपुर में हमेंशा लिगांनुपात ऊंचा रहा जो की सामाजिक व्यवस्था मे ऐसा होना उत्तम माना जाता है। तथा उनमें वैचारिक मत भेद नही होते है।

केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा महिला विकास में योजनाओं का प्रावधान

हमारे देश में घटती लिगांनुपात को आर्थिक पिछडापन व महिला स्वास्थ्य विभाग कि वजह से कई योजनाएं चला रखी है जो निम्नानुसार है।

1. बालवाडी पोषाहार कार्यक्रम।
2. समन्वित बाल विकास योजना।
3. किशोरी बाल योजना।
4. राष्ट्रीय मातृत्व लाभ योजना।
5. बालीका समृद्वि योजना।
6. कस्तुरबा गांधी बालिका विधालय योजना।
7. शिक्षा गांरटी योजना।
8. जनजाति बालिका निःषुल्क शिक्षा व व्यवस्था।
9. आशा योजना राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन।

वर्तमान में महिलाओं के बढती शिक्षा व प्रभाव क्षेत्र

वर्तमान समय में इस जिले में सरकार द्वारा चलाई गई विभिन्न योजनाओं का लाभ महिलाओं को मिल रहा है। साथ ही बालिका शिक्षा को काफी बढावा मिला है जिससे बालिकाओं मे प्रतिस्प्रधा की भावना उत्पन्न हो रही है । जो कई क्षेत्रो मे महिलाए पुरूषो के साथ कदम मिला कर आगे बढ रही है। जैसे षिक्षा क्षेत्र, स्वास्थ्य क्षेत्र, एवं कृषि क्षेत्र आदि।

निष्कर्ष

डूंगरपुर जिले मे जनसंख्या वृद्वि दर पर दृष्टिपात किया जाये तो राजस्थान में यहां लिगांनुपात सबसे अधिक पाया गया है। 1901 से वर्तमान तक लिगांनुपात में वृद्धि हो रही है। राजस्थान के विभिन्न जिलो के लिंगानुपात में असमान्ता पाई गई है। जो हर दृष्टि से विकसित है उनका लिगांनुपात कम पाया गया है। विधि की विडम्बना और हमारे सभ्य समाज में आज भी हम बच्चियों को जन्म देने से पहले ही जन्मदाता उन्हे मौत दे रहा है। आंगनवाडी केन्द्रो एवं अस्पतालो मे पंजीकृत गर्भवती महिलाओं और प्रसुताओं का अन्तर कम हो रहा है। इसका कारण है कि प्रसव पूर्व लींग परिक्षण और कन्या भ्रुण हत्या करने का संदेह है। जिससे लिंगानुपात में कमी आ रही है। जबकि डूंगरपुर जिले में वृद्धि का कारण लोगो में लडके व लडकीयां दोनो को समान दृष्टि से देखना तथा बच्चो को भगवान की देन मानना है। तथा लोगो का मानना है कि वह अपना कर्म लिखवाकर आता है जो बडा होकर अपना कार्य स्वंय करके जीवनयापन करेगा। ऐसी विचारधार मानी जाती है। जिससे लिंगानुपात में वृद्धि हुई

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *आर्थिक साख्यिकी निदेषालय, जिला सांख्यिकी रूप रेखा – डूंगरपुर*
2. *Census of India 2001 series -9*
3. *Chandna, R.C. (1996) : 'A Geography of Population' Klyalni Publishers Ludhiana, pp210-225*
4. *Srinivashan, K. (1996), Population Policy and Reprodactive Health, Hindustan Publishing Corporation New Delhi, P.236*